गुरु पूर्णिमा पर योगदा सत्संग मठ में कार्यक्रम

गुरु है, तो मंजिल है

- भक्ति और श्रद्धा निवेदित करने के लिए काफी संख्या में युवा भक्त भी जुटे

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

गुरु पूर्णिमा के अवसर पर मंगलवार को योगदा सत्संग मठ में अपने गुरु परमहंस योगानंद के प्रति भक्ति और श्रद्धा निवेदित करने के लिए काफी संख्या में युवा भक्त भी जुटे. इस दौरान भक्तों ने कतारबद्ध होकर अपने गुरु के चित्र पर माल्यार्पण किया और उनके बताये मार्ग पर चलने का संकल्प लिया.

कार्यक्रम में देश के कोने-कोने एवं विदेश से आये भक्त भी शरीक हुए. योगदा सत्संग मठ में शिव मंदिर के पास योगदा भक्तों ने यहां के संन्यासियों के साथ यज्ञ-पूजा अर्चना में भाग लिया. परमहंस योगानंद की आरती उतारी और विश्व कल्याण के लिए प्रार्थना की. इस मौके पर युवाओं ने कहा कि गुरु वो है, जो गलत राह में भटकने से रोकता है. गुरु है, तो मंजिल है. गुरु के बिना जीवन सार्थक नहीं होता.

कार्यक्रम के बाद प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु.

योगानंद जी की शिक्षा-दीक्षा को मैं शुरू से मानती आयी हूं. उनकी दीक्षा से मन को शांति मिलती है. सुख वह होता है, जो अंदर से आता है. उनकी शिक्षा मुझे जीना सिखाती है. आत्मा को परमात्मा से जोड़ती है.

मीरा मखीजा

मैं लखनऊ से यहां गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आया हूं. रांची के योगदा सत्संग के बारे में बहुत सुना है. यहां आकर जो शांति मिलती है, वो कहीं नही. वो गुरु ही होते हैं, जो अपने शिष्यों के लिए प्रार्थना करते हैं.

संदीप यादव

हम योगदा सत्संग ध्यान के लिए रेगुलर आते हैं. योगदा कॉलेज से ही पढ़ाई कर रहा हूं. गुरु पूर्णिमा का अपना अलग महत्व होता है. हर रविवार को यहां ध्यान और सत्संग के लिए आता हूं. इससे मुझे शांति मिलती है.

गौतम पाठक

गुरु पूर्णिमा के दिन सामूहिक सत्संग का आनंद ही अलग होता है. सामूहिक ध्यान का आनंद ही कुछ और है. इससे मन को शांति मिलती है. हमारे यहां परंपरा है कि हम दूसरों के अभिवादन में जय गुरु बोलते हैं.

हिमांशु कुमार

अध्यात्म की ओर आने से मन को शांति मिलती है.मन की चंचलता कम होती है. मुझे जब भी मौका मिलता है, तो योगदा आश्रम चला आता हूं. यहां आकर शांति मिलती है. मेरे जीवन में गुरु का अहम योगदान रहा है.

वाणी सेन गुप्ता

गुरु वो होते हैं, जिनसे हमारा वजूद बनता है. गुरु ईश्वर के समान होते है. गुरु हमें जो सिखाते हैं, हम उसे फॉलो करें तो हम सही मार्ग पर अवश्य जाते है.अन्यथा युवाओं की राह में गुरु के बिना भटकाव भी आ जाता है.

कनिष्ठा नयन